UPSC-12

Ans-12 राग-विराग के विशिष्ट कार्य / राग-विराग के नामकरण का औचित्य

डॉ० रामविलास शर्मा ने निराला की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन राग-विराग नाम से किया है। संकलन की भूमिका में पहले ही वाक्य में वह जिक्र करते हैं कि जब 1923 ई० में निराला ने 'मतवाला पत्र' प्रकाशित करना शुरू किया तो उसके मुख्य पृष्ठ के लिए निम्नलिखित दो पंक्तियाँ लिखीं—

"अमिय गरल शशि-सीकर रविकर राग-विराग भरा प्याला,
पीते हैं जो साधक उनका प्यारा है यह मतवाला।"

इसका भाव यह था कि मतवाला पत्र में जीवन-मृत्यु, अमृत-विष और राग-विराग — संसार के इन सनातन विरुद्धों या द्वंद्वों पर रचनाएँ प्रकाशित होंगी। डॉ० शर्मा के शब्दों में कहें तो मतवाला या कोई अन्य पत्र तो इस उद्देश्य पर खरा नहीं उतरा किन्तु इन पंक्तियों को सही सिद्ध किया निराला की अपनी कविताओं में। उनकी कविताओं में— जितना आनंद का अमृत है उतना ही वेदना का विष।

राग का अर्थ होता है प्रेम या लगाव, जबकि विराग का अर्थ है वैराग्य का भाव। प्रायः कवि जीवन की आसक्ति और अनासक्ति में 'एक राह चुनता है, 'विरुद्धों' का सामंजस्य' का साहस नहीं करता। जहाँ रीतिकाल के कवि सिर्फ आसक्ति में डूबे हैं वहीं मुक्तिबोध निरंतर मध्यवर्गीय अपराधबोध की हरपटाहट में; वहीं निराला ने आसक्ति